तर्ज--मेरी जिंदगी मे आते तो कुछ

तेरी आशिकी निभाते, तो कुछ और चाल होती
तुमसे ही दिल लगाते, तो कुछ और चाल होती

1--कई बार आप आये ,यहां तन बदल बदल के
राहे वतन दिखाई खुद, आप पहले चल के
हम भी कदम बढ़ाते.....

2--अनहोनियां भी तुमने, आ कर बहुत करी है
रूहों के झूठे तन मे ,बैठक अर्श करी है
पहचान तुमको जाते....

3--खिलवत करी है जाहेर,अपनी रूहों की खातिर
वरना ये झूठा आलम, इसके नही था काबिल
दिल मे दरद जगाते.....

4--इतनी पुकारे सुन कर, हाय क्यों ना रूह जगी है
वचनो के बाण से भी, कोई चोट ना लगी है
रहनी मे रूह की आते.....

Nijanand App